सिटी फ्रंट पेज

आज का मौसम			
उदयपुर	30.4	11.8	सूर्यास्त आज 06.34 pm
जयपुर	27.3	14.2	
अजमेर	28.0	12.2	सूर्योदय कल 07.03 am
जोधपुर	28.8	11.2	

- एमपीयूएटी के गृह विज्ञान का विशेष कार्यक्रम
- पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष में करतीं है गांव में निवास

एक माह आदिवासी इलाकों में रह समस्याओं से लड़ना सीखतीं और सिखाती हैं कॉलेज छात्राएं

उदयपुर | एक ओर जहां छात्राएं आज पढ़ाई करने और विशेष ट्रेनिंग लेने शहरों की ओर रुख कर रही हैं वहीं शहर के एमपीयूएटी के गृह विज्ञान महाविद्यालय की छात्राएं पाठ्यक्रम के दौरान एक माह आदिवासी क्षेत्रों में गुजार कर जीवन जीने के तरीके सीखती और सिखाती हैं। इस दौरान छात्राएं सरकारी योजनाओं को लेकर लोगों को जागरूक करने के साथ उनके अधिकारों के प्रति जगाती भी हैं। महाविद्यालय के चार वर्ष के पाठ्यक्रम में अंतिम वर्ष की छात्राएं एक माह तक सुदूर ऐसे आदिवासी क्षेत्रों में रहती हैं जहां के लोग आज सरकारी योजनाओं की पहुंच से दूर हैं। महाविद्यालय में रावा नाम का यह पाठ्यक्रम करीब 9 साल पहले शुरू हुआ था जो आज भी सफलता पूर्वक चल रहा है। कार्यक्रम के दौरान प्रतिवर्ष औसतन 20 छात्राएं आदिवासी क्षेत्रों में रहकर वहां के लोगों का खाना-पीना, रहना और चुनौतियों से लड़ने के बारे में जानकर प्रेरित भी होती हैं।

कार्यक्रम के यह है उद्देश्य

कॉलेज अधिष्ठाता डॉ. शशि ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को ग्रामीण जीवन, ग्रामीणों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियां और समस्याओं को समझाने का अवसर प्रदान करना है। इसके साथ ही छात्राओं को तकनीकी हस्तांतरण और प्रसार विधियों के उपयोग, प्रभावी संप्रेषण में दक्ष बनाकर उनमें ग्रामीण समस्याओं के समाधान करने के लिए कौशल और आत्म विश्वास बढ़ाना है।

गृह विज्ञान महाविद्यालय की छात्राएं ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता कार्यक्रम करती हुईं।

कार्यक्रम के दौरान छात्राएं ये बताती हैं

संतुलित और पूरक आहार के बारे बताना, बाल पोषण, बाल विकास, पारिवारिक संसाधन प्रबंध, वस्त्र विज्ञान और परिधान संबंधी जागरुकता, मूल्य संवर्धन, अनाज का सुरक्षित भंडारण, पर्यावरण स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल, पशुपालन, उन्नत पशु आहार, कम्पोस्ट बनाना, आय उपार्जन के साधन, थकान बचाने के साधन, सुरक्षात्मक वस्त्र के बारे में बताना आदि कार्य मुख्य हैं। कॉलेज की छात्रा रही अनुपिता पुरोहित ने बताया कि भादसोड़ा गांव में एक माह बिताया था। वहां ग्रामीण क्षेत्र में बहुत कुछ सीखने को और लोगों को सिखाने को भी मिला।

कार्यक्रम के बाद आदिवासी क्षेत्रों में आया बदलाव

डॉ. शशि जैन ने बताया कि अलग-अलग गांवों यह कार्यक्रम हर साल किया जाता है। अब तक भादसोड़ा, मंडफिया, कानपुर, लखावली, बड़गांव, मदार, बेड़वास, कलड़वास किया जा चुका है। वहां पर छात्राओं के साथ महिला शिक्षक भी होती हैं। कार्यक्रम के बाद उस गांव का फीडबैक भी लिया जाता है। जिसके आधार पर पता चलता है कि उन आदिवासी क्षेत्रों में काफी बदलाव आया है।